निन्दक नियरे राखिए

डा. गंगा प्रसाद बरसैंया

निन्दक नियरे राखिये

डॉ. गंगा प्रसाद बरसैंया द्वारा लिखित
बीस व्यंग्य आलेख

अनुभव
प्राप्त करने के लिए
बहुत अधिक
मूल्य चुकाना पड़ता है।

-करलाइल-

ISBN-81-86054-38-3

(C) लेखक

प्रथम संस्करण : 1995

कीमत : अस्सी रूपये/आवरण–कोलाज : विषधर शंकर/ प्रकाशक : मगध प्रकाशन, 4649/123-ए, न्यू माडर्न शाहदरा, मंडोली रोड़, दिल्ली–110032/ लेजर टाइप सैटिंग : विजय प्रिन्टर्स, 3/93, ललिता पार्क, लक्ष्मी नगर, दिल्ली–110092/ मुद्रक : सोनी प्रिन्टर्स, नवीन शाहदरा, दिल्ली–32

NINDAK NEYARE RAKHIYE (Byang)

BY Dr. Ganga Prasad Barasaiyan **Rs. 80**

समर्पण

सपूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान के साथ।

ममतामयी दीदी (मां) को
जिसने अपनी
कर्मठता से
विपरीत परिस्थितियों में भी
जीवन जीने के
संस्कार देकर
मुझे इस योग्य बनाया।

अंगुलि निर्देश

वर्तमान जीवन को जितनी यातना सामाजिक मूल्यों के अवमूल्यन और आदर्शों के विघटन के कारण सहनी पड़ रही है उतनी यातना संभवतः इसके पूर्व कभी नहीं सही गई। कारण यह है कि शासन–सूत्रों के प्रजातांत्रिक मूल्यों के नियमन का इतना व्यापक अधिकार जनसामान्य को इससे पूर्व इतिहास में कभी नहीं मिला। जब तक व्यक्ति दूसरों से परिचालित होता है तब तक वह अनेक दुर्व्यवस्थाओं का दोष दूसरों पर थोपकर अपनी विवशताओं के ताने–बाने में अपने को ढकने–बचाने की चेष्टा कर लेता है, किन्तु जब उसकी भूमिका में वह स्वयं हो तब बचने का कोई उपाय नहीं होता। विषमताओं और विद्रूपताओं की सारी यातना इस स्थिति में संकल्पवान संवेदनशील आत्मा को ही झेलनी पड़ती है। निश्चित रूप से यातना की यह पीड़ा जीवित आत्माओं को प्रभावित करती है, जड़ आत्माओं को नहीं।

विषमताओं, विद्रूषताओं के बहुआयामी स्वरूप आज हमें सर्वत्र दिखाई देते हैं। धर्म, अर्थ, राजनीति, साहित्य, संस्कृति सब इससे प्रभावित हैं। समाज का हर व्यक्ति जहां भी है, मुखौटों की नकली और दोहरी जिंदगी जीने के लिए अभिशप्त लगता है। इसके पीछे उसके अपने स्वार्थ भी हैं और परिस्थितियां भी। शस्त्र और शास्त्र की नैतिक पीठिका पर जीवन–व्यवस्था को संचालित करने का हमारा स्वभाव परम्परा से रहा है किंतु वे सारे मानदंड आज की व्यावहारिक जिंदगी के साथ तालमेल नहीं बिठा पाते। सैद्धान्तिक आदर्शों की किताबें पढ़ते हुए जानबूझकर उसके विपरीत जीवन जीने की जो अनैतिक यातना है– वह प्रतिक्षण भीतरी भावभूमि को कुरेदती रहती है। यह कुरेदन जब सहनशीलता की सीमा में नहीं बंध पाती तो व्यक्त होती है। व्यक्त होने के अनेक रूप हो सकते हैं जिन्हें पोस्टरों से लेकर पुराणों तक और खिलौनों से लेकर संग्रहालयों तक में देखा जा सकता है।

गांव की गली से लेकर संसद की पुनीत आसंदी तक आज जो भी हो रहा है वह सब चौंकानेवाला है। नियम, संविधान और आदर्शों की दुर्दशा ने प्रदूषण का जो कड़वा धुंवा फैलाया है उससे हर आंख लाल तो होती है, किंतु डबडबा कर रह जाती है। सारे देश में फैली मनमानी, पारस्परिक द्वेष, जीवन की सौदेबाजी की हद तक फैला भ्रष्टाचार किसे पीड़ित और लज्जित नहीं करता है? भीड़ के चीत्कार में रोता–भागता हर व्यक्ति बहरा और असहाय है। चीत्कार जब पच नहीं पाती, तब आकार पाती है।

अभिव्यक्ति का यह आकार व्यवस्था के मुखौटों को बेनकाब न कर दे इसके लिये पद–प्रतिष्ठा, पुरस्कार और सम्मान के अनेक उपाय अनेक माध्यमों से किये जाते हैं। रोते–चिल्लाते मानस को चुप कराने की चेष्टा की जाती है। जिस प्रकार चोट खाये व्यक्ति की पीड़ा जरीदार कीमती कपड़ों और पुष्पहारों से दूर नहीं होती उसी प्रकार जीवंत आत्मा की पीड़ा इस प्रकार के समाधानों से सुख नहीं पाती। यह बात अलग है कि व्यवस्था का प्रचार तंत्र उसे सत्कर्म और आदर्शयज्ञ के महोत्सव के रूप में प्रचारित करे। यह तो उसी प्रकार है जैसे शवयात्रा के अंतिम पड़ाव पर आयोजन की रचना। यह भी बेशर्मी और कुरूपता का एक स्वरूप है जो सफेद कपड़ों में ढंककर सजाया जाता है। इस सफेद कपड़े के भीतर झांक लेने की जिसके पास सामर्थ्य है वे भला किस प्रकार संतुष्ट हो सकते हैं?

आज का रचनाकार इन्हीं सब को शब्दों ढालता है। उसकी नियति कुरूपताओं का बाजार लगाना कतई नहीं है। वह चाहता है कि व्यवस्था का वह विकार जो सामाजिक जीवन को पंगु बनाने की चेष्टा कर रहा है उसकी ओर लोगों का ध्यान जाये और उसे

यथाशीघ्र दूरंकर समाज को स्वस्थ बनाया जाये। ऐसा नहीं है कि जीवन के परिवेश में सब कुछ कुरूप ही है। बहुत कुछ सुस्वादु, सुदर्शन और सुखद भी है। उसकी ओर प्रेरित करना भी शब्द–साधक का कर्तव्य है। जो इसे नहीं निभाता वह एकांगी है।

इस संग्रह के व्यंग्य लेखों में मेरे अपने भीतर की पीड़ा ही व्यक्त हुई है। विकृतियों और विद्रूपताओं की जो यातना मैंने झेली है वही शब्दों में उतरी है। मूलतः हमारा जीवन आदर्शों का अनुयायी है। हमारे सारे संकल्प उसी दिशा की ओर जाते हैं किंतु जब तंत्र हमारे आदर्श संकल्पों को तार–तार कर देता है तो टूटे टुकड़े शब्दों का आकार पा जाते हैं। असह्य पीड़ा सहकर भी मुस्कराते हुये दूसरों को गुदगुदाकर जगाने की चेष्टा साधारण काम नहीं है। गहरी और 'रिस्की' साधना है। इस साधना के पीछे भी भविष्य को सुंदर और सुखद बनाने की विश्वासी भावना निहित रहती है।

मेरे इन निबंधों में न चोट है, न चांटा। हां, अंगुली–निर्देश बराबर है। मुस्कराते हुये झकझोरने का प्रयास है। मीठी गोली में दवा देने की भावना है। वीभत्सता और फूहड़पन का बाजार सजाकर हंसाने की कला का मैं कतई पक्षधर नहीं हूं। इंजेक्शन और केपसूल में जो ताकत है वह पुलटिस में नहीं। होमियोपैथी की छोटी–छोटी गोलियों का प्रयोग करना ही मेरा मार्ग है, जो ठीक बैठ जाये तो रोग को उभारकर ठीक कर देती है और ठीक न बैठे तो नुकसान भी नहीं करती। नुकसान करने की भावना इनमें दूर–दूर तक न मिलेगी। कह नहीं सकता कि इसमें कितनी सफलता मिली है। इसका निर्णय आप सबको करना है। **संत हंस गुन गहहिं पय परिहरि वारि विकार।**

व्यक्ति–स्वार्थ से घिरे तथाकथित दुराग्रही विद्वानों की सराहना अथवा आलोचना का कोई अर्थ नहीं होता क्योंकि उनकी दृष्टि में वस्तु और क्रिया न होकर व्यक्ति और वाद होता है। ऐसे दृष्टिदोषी लोग यदि बुरा भी कहें तो वह हितकर ही है क्योंकि उन्होंने कुछ कहने लायक स्वीकार तो किया। तुलसीदास जी ने लिखा है– **खल परिहास होय हित मोरा।** संग्रह के सारे निबंध या तो आकाशवाणी छतरपुर द्वारा प्रसारित हैं अथवा किसी पत्र–पत्रिका में प्रकाशित। कई को बहुत सराहा भी गया है। अतः प्रसारकों, प्रकाशकों और सराहने वाले के प्रति आभार व्यक्त करना मेरा धर्म ही है, जो निभा रहा हूं।

कई मित्रों का आग्रह इसके प्रकाशन का रहा है। लंबी प्रतीक्षा के बाद इसकी पूर्ति भाई सुरंजन जी ने मगध प्रकाशन, दिल्ली के माध्यम से कर दी। आर्थिक समस्याओं से जूझते हुये भी इन्होंने इस दायित्व को बड़ी आत्मीयता से पूरा किया। उन्हें मेरा धन्यवाद और आभार भी।

इन निबंधों में कहीं न कहीं मेरा परिवार (धर्म पत्नी और बच्चे) तथा मित्र वर्ग भी शामिल हैं। वे अभिव्यक्ति के आधार और इस आकार के सहयोगी हैं। अतः श्रीमती लक्ष्मी बरसैंया सहित बेटी रश्मि, रजनी, रीता तथा चि. अभिलाष को सस्नेह धन्यवाद। मित्रों के प्रति हार्दिक कृतज्ञता। हिन्दी के प्राध्यापक श्री बहादुर सिंह परमार ने इन्हें पढ़कर व्यवस्थित किया, इसके लिए वे भी धन्यवाद के पात्र हैं।

-डॉ. गंगाप्रसाद बरसैंया

स्थायी निवासः
12 एम.आई.जी. हाऊसिंग बोर्ड कालोनी,
छतरपुर-4710001 (म.प्र.)
फोन : 31024 (S.T.D.-07682)

मेरे इन निबधो मे न चोट है. न चाट। हा, अगुली--निर्देश बराबर है। मुस्कराते हुये झकझोरने का प्रयास है। मीठी गोली में दवा देने की भावना है। वीभत्सता और फूहड़पन का बाजार सजाकर हंसाने की कला का मैं कतई पक्षधर नहीं हू। इंजेक्शन और केपसूल में जो ताकत है वह पुलटिस में नहीं। होमियोपैथी की छोटी–छोटी गोलियों का प्रयोग करना ही मेरा मार्ग है, जो ठीक बैठ जाये तो रोग को उभारकर ठीक कर देती है और ठीक न बैठे तो नुकसान भी नहीं करती। नुकसान करने की भावना इनमें दूर–दूर तक न मिलेगी। कह नहीं सकता कि इसमें कितनी सफलता मिली है। इसका निर्णय आप सबको करना है। **संत हंस गुंन गहहिं पय परिहरि वारि विकार।**

1. नाम : **डा. गंगा प्रसाद गुप्त 'बरसैंया'**

2. जन्मस्थान : भौरी, जिला बांदा (उ.प्र.) जन्मतिथि 6 फरवरी 1937

3. पद : प्राचार्य,

4. संस्था : शासकीय छत्रसाल महाराजा महाविद्यालय, महाराजपुर जिला छतरपुर (म.प्र.)

5. योग्यता : एम.ए. (हिन्दी) प्रथम श्रेणी
पी.एच.डी. (सन् 1964) जबलपुर विश्वविद्यालय
(हिन्दी साहित्य में व्यक्तिवादी निबंध और निबंधकार)

6. **प्रकाशित कृतियां :**

1. हिन्दी साहित्य में निबंध और निबंधकार (शोध प्रबंध) 2. छत्तीसगढ़ का साहित्य और उसके साहित्यकार/ 3. आधुनिक काव्य : संदर्भ और प्रकृति/ 4. हिन्दी के प्रमुख एकांकी और एकांकीकार/ 5. बुन्देली : एक भाषा वैज्ञानिक अध्ययन (सम्पादित)/ 6. मानस मनीषा (सम्पादित)/समवाय (सम्पादित)/ 7. विन्ध्यालोक (सम्पादित)/अरमान वर पाने का (व्यंग)/ 8. हिन्दी का प्रथम अज्ञात सुदामा चरित्र (सम्पादन)/ 9. एकांकी संकलन (सम्पादन)/ 10. वीर विलास (आल्हा संबंधी प्राचीनतम पांडुलिपि)/ 11. नारी : एक अध्ययन/मध्यकालीन काव्य (सम्पादन)/ 12. निन्दक नियरे राखिये (व्यंग)

7. **अप्रकाशित कृतियां :**

1. कर्म और आराधना/रचना से रचना तक/ 2. चिन्तन अनुचिन्तन/अनुभूति के क्षण/ 3. बुन्देलखंड के अज्ञात रचनाकार/

8. **अन्य प्रकाशन एवं उपलब्धियां** : लगभग 100 लेखों का विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में **प्रकाशन**

1. अनेक विश्वविद्यालयों से संबद्ध 2. महाकवि केशव अनुसंधान केंद्र ओरछा (रीवा वि.वि) के दो वर्ष तक संचालक (डायरेक्टर) 3. 1990 में अखिल भारतीय भाषा साहित्य सम्मेलन की साहित्य श्री' उपाधि से तत्कालीन महामहिम उपराष्ट्रपति डा. शंकर दयाल शर्मा के कर कमलो से अलकृत। 4. म.प्र. आंचलिक साहित्यकार परिषद ईकाई छतरपुर एवं बुन्देलखड कला संस्कृति परिषद् के अध्यक्ष।

स्थाई निवास : **12 एम.आई.जी., हाउसिंग बोर्ड कालोनी, छतरपुर (म.प्र.)**
फोन- 31024 (**क्र**-07682)